

हनुमान बाहुक हिन्दी लिखित

श्रीगणेशाय नमः
श्रीजानकीवल्लभो विजयते
श्रीमद्-गोस्वामी-तुलसीदास-कृत

छप्पय

सिंधु-तरन, सिय-सोच-हरन, रबि-बाल-बरन तनु ।
भुज बिसाल, मूरति कराल कालहुको काल जनु ॥
गहन-दहन-निरदहन लंक निःसंक, बंक-भुव ।
जातुंधान-बलवान-मान-मद-दवन पवनसुव ॥
कह तुलसिदास सेवत सुलभ सेवक हित सन्तत निकट ।
गुन-गनत, नमत, सुमिरत, जपत समन सकल-संकट-विकट ॥१॥

स्वर्न-सैल-संकास कोटि-रबि-तरुन-तेज-घन ।
उर बिसाल भुज-दंड चंड नख-बज्र बज्र-तन ॥
पिंग नयन, भृकुटी कराल रसना दसनानन ।
कपिस केस, करकस लँगूर, खल-दल बल भानन ॥
कह तुलसिदास बस जासु उर मारुतसुत मूरति बिकट ।
संताप पाप तेहि पुरुष पहिं सपनेहुँ नहिं आवत निकट ॥२॥

झूलना

पंचमुख-छमुख-भृगु मुख्य भट असुर सुर, सर्व-सरि-समर समरत्थ सूरु ।
बाँकुरो बीर बिरुदैत बिरुदावली, बेद बंदी बदत पैजपूरु ॥
जासु गुनगाथ रघुनाथ कह, जासुबल, बिपुल-जल-भरित जग-जलधि झूरु ।
दुवन-दल-दमनको कौन तुलसीस है, पवन को पूत रजपूत रुरु ॥३॥

घनाक्षरी

भानुसौ पढ़न हनुमान गये भानु मन-अनुमानि सिसु-केलि कियो फेरफार सो ।
पाछिले पगनि गम गगन मगन-मन, क्रम को न भ्रम, कपि बालक बिहार सो ॥
कौतुक बिलोकि लोकपाल हरि हर बिधि, लोचननि चकाचौंधी चितनि खभार
सो।

बल कैंधौं बीर-रस धीरज कै, साहस कै, तुलसी सरीर धरे सबनि को सार सो
॥४॥

भारत में पारथ के रथ केथू कपिराज, गाज्यो सुनि कुरुराज दल हल बल भो ।
कहयो द्रोण भीषम समीर सुत महाबीर, बीर-रस-बारि-निधि जाको बल जल भो
॥

बानर सुभाय बाल केलि भूमि भानु लागि, फलंग फलांग हूँतें घाटि नभतल भो ।
नाई-नाई माथ जोरि-जोरि हाथ जोधा जोहैं, हनुमान देखे जगजीवन को फल भो
॥५॥

गो-पद पयोधि करि होलिका ज्यों लाई लंक, निपट निसंक परपुर गलबल भो ।
द्रोण-सो पहार लियो ख्याल ही उखारि कर, कंदुक-ज्यों कपि खेल बेल कैसो फल
भो ॥

संकट समाज असमंजस भो रामराज, काज जुग पूगनि को करतल पल भो ।

साहसी समत्थ तुलसी को नाह जाकी बाँह, लोकपाल पालन को फिर थिर थल भो

॥६

कमठ की पीठि जाके गोडनि की गाड़ें मानो, नाप के भाजन भरि जल निधि जल
भो ।

जातुधान-दावन परावन को दुर्ग भयो, महामीन बास तिमि तोमनि को थल भो

॥

कुम्भकरन-रावन पयोद-नाद-ईंधन को, तुलसी प्रताप जाको प्रबल अनल भो ।
भीषम कहत मेरे अनुमान हनुमान, सारिखो त्रिकाल न त्रिलोक महाबल भो ॥७

दूत रामराय को, सपूत पूत पौनको, तू अंजनी को नन्दन प्रताप भूरि भानु सो ।
सीय-सोच-समन, दुरित दोष दमन, सरन आये अवन, लखन प्रिय प्रान सो ॥
दसमुख दुसह दरिद्र दरिबे को भयो, प्रकट तिलोक ओक तुलसी निधान सो ।
जान गुनवान बलवान सेवा सावधान, साहेब सुजान उर आनु हनुमान सो ॥८

दवन-दुवन-दल भुवन-बिदित बल, बेद जस गावत बिबुध बंदीछोर को ।
पाप-ताप-तिमिर तुहिन-विघटन-पटु, सेवक-सरोरुह सुखद भानु भोर को ॥
लोक-परलोक तैं बिसोक सपने न सोक, तुलसी के हिये है भरोसो एक ओर को ।
राम को दुलारो दास बामदेव को निवास, नाम कलि-कामतरु केसरी-किसोर को

॥९॥

महाबल-सीम महाभीम महाबान इत, महाबीर बिदित बरायो रघुबीर को ।
कुलिस-कठोर तनु जोरपरै रोर रन, करुना-कलित मन धारमिक धीर को ॥
दुर्जन को कालसो कराल पाल सज्जन को, सुमिरे हरनहार तुलसी की पीर को ।
सीय-सुख-दायक दुलारो रघुनायक को, सेवक सहायक है साहसी समीर को

॥१०॥

रचिबे को बिधि जैसे, पालिबे को हरि, हर मीच मारिबे को, ज्याईबे को सुधापान
भो ।

धरिबे को धरनि, तरनि तम दलिबे को, सोखिबे कृसानु, पोषिबे को हिम-भानु भो
॥

खल-दुःख दोषिबे को, जन-परितोषिबे को, माँगिबो मलीनता को मोदक सुदान
भो ।

आरत की आरति निवारिबे को तिहुँ पुर, तुलसी को साहेब हठीलो हनुमान भो
॥११॥

सेवक स्योकाई जानि जानकीस मानै कानि, सानुकूल सूलपानि नवै नाथ नाँक
को ।

देवी देव दानव दयावने हवै जोरैं हाथ, बापुरे बराक कहा और राजा राँक को ॥
जागत सोवत बैठे बागत बिनोद मोद, ताके जो अनर्थ सो समर्थ एक आँक को ।
सब दिन रुरो परै पूरो जहाँ-तहाँ ताहि, जाके है भरोसो हिये हनुमान हाँक को
॥१२॥

सानुग सगौरि सानुकूल सूलपानि ताहि, लोकपाल सकल लखन राम जानकी ।
लोक परलोक को बिसोक सो तिलोक ताहि, तुलसी तमाइ कहा काहू बीर आनकी
॥

केसरी किसोर बन्दीछोर के नेवाजे सब, कीरति बिमल कपि करुनानिधान की ।
बालक-ज्यों पालिहैं कृपालु मुनि सिद्ध ताको, जाके हिये हुलसति हाँक हनुमान
की ॥१३॥

करुनानिधान, बलबुद्धि के निधान मोद-महिमा निधान, गुन-ज्ञान के निधान
हौ ।

बामदेव-रूप भूप राम के सनेही, नाम लेत-देत अर्थ धर्म काम निरबान हौ ॥
आपने प्रभाव सीताराम के सुभाव सील, लोक-बेद-बिधि के बिदूष हनुमान हौ ।
मन की बचन की करम की तिहूँ प्रकार, तुलसी तिहारो तुम साहेब सुजान हौ

॥१४॥

मन को अगम, तन सुगम किये कपीस, काज महाराज के समाज साज साजे हैं ।
देव-बंदी छोर रनरोर केसरी किसोर, जुग जुग जग तेरे बिरद बिराजे हैं ।
बीर बरजोर, घटि जोर तुलसी की ओर, सुनि सकुचाने साधु खल गन गाजे हैं ।
बिगरी सँवार अंजनी कुमार कीजे मोहिं, जैसे होत आये हनुमान के निवाजे हैं

॥१५॥

सवैया

जान सिरोमनि हौ हनुमान सदा जन के मन बास तिहारो ।
ढारो बिगारो में काको कहा केहि कारन खीझत हौं तो तिहारो ॥
साहेब सेवक नाते तो हातो कियो सो तहाँ तुलसी को न चारो ।
दोष सुनाये तैं आगेहुँ को होशियार हवैं हौं मन तौ हिय हारो ॥१६॥

तेरे थपे उथपै न महेस, थपै थिरको कपि जे घर घाले ।
तेरे निवाजे गरीब निवाज बिराजत बैरिन के उर साले ॥
संकट सोच सबै तुलसी लिये नाम फटै मकरी के से जाले ।
बूढ़ भये, बलि, मेरिहि बार, कि हारि परे बहुतै नत पाले ॥१७॥

सिंधु तरे, बड़े बीर दले खल, जारे हैं लंक से बंक मवा से ।
तैं रनि-केहरि केहरि के बिदले अरि-कुंजर छैल छवा से ॥

तोसों समत्थ सुसाहेब सेई सहै तुलसी दुख दोष दवा से ।
बानर बाज ! बढे खल-खेचर, लीजत क्योँ न लपेटि लवा-से ॥१८॥

अच्छ-विमर्दन कानन-भानि दसानन आनन भा न निहारो ।
बारिदनाद अकंपन कुंभकरन्न-से कुंजर केहरि-बारो ॥
राम-प्रताप-हुतासन, कच्छ, बिपच्छ, समीर समीर-दुलारो ।
पाप-तें साप-तें ताप तिहूँ-तें सदा तुलसी कहँ सो रखवारो ॥१९॥

घनाक्षरी

जानत जहान हनुमान को निवाज्यौ जन, मन अनुमानि बलि, बोल न बिसारिये

|

सेवा-जोग तुलसी कबहुँ कहा चूक परी, साहेब सुभाव कपि साहिबी सँभारिये ॥
अपराधी जानि कीजै सासति सहस भाँति, मोदक मरै जो ताहि माहुर न मारिये ।
साहसी समीर के दुलारे रघुबीर जू के, बाँह पीर महाबीर बेगि ही निवारिये ॥२०॥

बालक बिलोकि, बलि बारेतें आपनो कियो, दीनबन्धु दया कीन्हों निरुपाधि
न्यारिये ।

रावरो भरोसो तुलसी के, रावरोई बल, आस रावरीयै दास रावरो बिचारिये ॥
बड़ो बिकराल कलि, काको न बिहाल कियो, माथे पगु बलि को, निहारि सो
निवारिये ।

केसरी किसोर, रनरोर, बरजोर बीर, बाँहुपीर राहुमातु ज्योँ पछारि मारिये ॥२१॥

उथपे थपनथिर थपे उथपनहार, केसरी कुमार बल आपनो सँभारिये ।
राम के गुलामनि को कामतरु रामदूत, मोसे दीन दूबरे को तकिया तिहारिये ॥
साहेब समर्थ तोसों तुलसी के माथे पर, सोऊ अपराध बिनु बीर, बाँधि मारिये ।

पोखरी बिसाल बाँहु, बलि, बारिचर पीर, मकरी ज्यों पकरि कै बदन बिदारिये

॥२२॥

राम को सनेह, राम साहस लखन सिय, राम की भगति, सोच संकट निवारिये ।

मुद-मरकट रोग-बारिनिधि हेरि हारे, जीव-जामवंत को भरोसो तेरो भारिये ॥

कूदिये कृपाल तुलसी सुप्रेम-पब्बयतें, सुथल सुबेल भालू बैठि कै बिचारिये ।

महाबीर बाँकुरे बराकी बाँह-पीर क्यों न, लंकिनी ज्यों लात-घात ही मरोरि मारिये

॥२३॥

लोक-परलोकहुँ तिलोक न बिलोकियत, तोसे समरथ चष चारिहुँ निहारिये ।

कर्म, काल, लोकपाल, अग-जग जीवजाल, नाथ हाथ सब निज महिमा बिचारिये

॥

खास दास रावरो, निवास तेरो तासु उर, तुलसी सो देव दुखी देखियत भारिये ।

बात तरुमूल बाँहुसूल कपिकच्छु-बेलि, उपजी सकेलि कपिकेलि ही उखारिये

॥२४॥

करम-कराल-कंस भूमिपाल के भरोसे, बकी बकभगिनी काहू तें कहा डरैगी ।

बड़ी बिकराल बाल घातिनी न जात कहि, बाँहूबल बालक छबीले छोटे छरैगी ॥

आई है बनाइ बेष आप ही बिचारि देख, पाप जाय सबको गुनी के पाले परैगी ।

पूतना पिसाचिनी ज्यों कपिकान्ह तुलसी की, बाँहपीर महाबीर तेरे मारे मरैगी

॥२५॥

भालकी कि कालकी कि रोष की त्रिदोष की है, बेदन बिषम पाप ताप छल छाँह

की ।

करमन कूट की कि जन्त्र मन्त्र बूट की, पराहि जाहि पापिनी मलीन मन माँह की

॥

पैहहि सजाय, नत कहत बजाय तोहि, बाबरी न होहि बानि जानि कपि नाँह की ।
आन हनुमान की दुहाई बलवान की, सपथ महाबीर की जो रहै पीर बाँह की

॥२६॥

सिंहिका सँहारि बल, सुरसा सुधारि छल, लंकिनी पछारि मारि बाटिका उजारी है

|

लंक परजारि मकरी बिदारि बारबार, जातुधान धारि धूरिधानी करि डारी है ॥
तोरि जमकातरि मंदोदरी कढ़ोरि आनी, रावन की रानी मेघनाद महँतारी है ।
भीर बाँह पीर की निपट राखी महाबीर, कौन के सकोच तुलसी के सोच भारी है

॥२७॥

तेरो बालि केलि बीर सुनि सहमत धीर, भूलत सरीर सुधि सक्र-रबि-राहु की ।
तेरी बाँह बसत बिसोक लोकपाल सब, तेरो नाम लेत रहै आरति न काहु की ॥
साम दान भेद बिधि बेदहू लबेद सिधि, हाथ कपिनाथ ही के चोटी चोर साहु की ।
आलस अनख परिहास कै सिखावन है, एते दिन रही पीर तुलसी के बाहु की

॥२८॥

टूकनि को घर-घर डोलत कँगाल बोलि, बाल ज्यों कृपाल नतपाल पालि पोसो है

|

कीन्ही है सँभार सार अँजनी कुमार बीर, आपनो बिसारि हैं न मेरेहू भरोसो है ॥
इतनो परेखो सब भाँति समरथ आजु, कपिराज साँची कहों को तिलोक तोसो है ।
सासति सहत दास कीजे पेखि परिहास, चीरी को मरन खेल बालकनि को सो है

॥२९॥

आपने ही पाप तें त्रिपात तें कि साप तें, बड़ी है बाँह बेदन कही न सहि जाति है ।
औषध अनेक जन्त्र मन्त्र टोटकादि किये, बादि भये देवता मनाये अधिकाति है

॥

करतार, भरतार, हरतार, कर्म काल, को है जगजाल जो न मानत इताति है ।
चेरो तेरो तुलसी तू मेरो कहयो राम दूत, ढील तेरी बीर मोहि पीर तें पिराति है

॥३०॥

दूत राम राय को, सपूत पूत बाय को, समत्व हाथ पाय को सहाय असहाय को ।
बाँकी बिरदावली बिदित बेद गाइयत, रावन सो भट भयो मुठिका के घाय को ॥

एते बड़े साहेब समर्थ को निवाजो आज, सीदत सुसेवक बचन मन काय को ।
थोरी बाँह पीर की बड़ी गलानि तुलसी को, कौन पाप कोप, लोप प्रकट प्रभाय को

॥३१॥

देवी देव दनुज मनुज मुनि सिद्ध नाग, छोटे बड़े जीव जेते चेतन अचेत हैं ।
पूतना पिसाची जातुधानी जातुधान बाम, राम दूत की रजाइ माथे मानि लेत हैं

॥

घोर जन्त्र मन्त्र कूट कपट कुरोग जोग, हनुमान आन सुनि छाड़त निकेत हैं ।
क्रोध कीजे कर्म को प्रबोध कीजे तुलसी को, सोध कीजे तिनको जो दोष दुख देत
हैं ॥३२॥

तेरे बल बानर जिताये रन रावन सों, तेरे घाले जातुधान भये घर-घर के ।
तेरे बल रामराज किये सब सुरकाज, सकल समाज साज साजे रघुबर के ॥
तेरो गुनगान सुनि गीरबान पुलकत, सजल बिलोचन बिरंचि हरि हर के ।
तुलसी के माथे पर हाथ फेरो कीसनाथ, देखिये न दास दुखी तोसो कनिगर के

॥३३॥

पालो तेरे टूक को परेहू चूक मूकिये न, कूर कौड़ी दूको हों आपनी ओर हेरिये ।
भोरानाथ भोरे ही सरोष होत थोरे दोष, पोषि तोषि थापि आपनी न अवडेरिये ॥

अँबु तू हौं अँबुचर, अँबु तू हौं डिंभ सो न, बूझिये बिलंब अवलंब मेरे तेरिये ।
बालक बिकल जानि पाहि प्रेम पहिचानि, तुलसी की बाँह पर लामी लूम फेरिये

॥३४॥

घेरि लियो रोगनि, कुजोगनि, कुलोगनि ज्यौं, बासर जलद घन घटा धुकि धाई है

।

बरसत बारि पीर जारिये जवासे जस, रोष बिनु दोष धूम-मूल मलिनाई है ॥
करुनानिधान हनुमान महा बलवान, हेरि हँसि हाँकि फूँकि फौजें ते उड़ाई है ।
खाये हुतो तुलसी कुरोग राढ़ राकसनि, केसरी किसोर राखे बीर बरिआई है

॥३५॥

सवैया

राम गुलाम तु ही हनुमान गोसाँई सुसाँई सदा अनुकूलो ।
पाल्यो हौं बाल ज्यौं आखर दू पितु मातु सों मंगल मोद समूलो ॥
बाँह की बेदन बाँह पगार पुकारत आरत आनंद भूलो ।
श्री रघुबीर निवारिये पीर रहौं दरबार परो लटि लूलो ॥३६॥

घनाक्षरी

काल की करालता करम कठिनाई कीधौं, पाप के प्रभाव की सुभाय बाय बावरे ।
बेदन कुभाँति सो सही न जाति राति दिन, सोई बाँह गही जो गही समीर डाबरे ॥
लायो तरु तुलसी तिहारो सो निहारि बारि, सींचिये मलीन भो तयो है तिहुँ तावरे ।
भूतनि की आपनी पराये की कृपा निधान, जानियत सबही की रीति राम रावरे

॥३७॥

पाँय पीर पेट पीर बाँह पीर मुँह पीर, जरजर सकल पीर मई है ।
देव भूत पितर करम खल काल ग्रह, मोहि पर दवरि दमानक सी दई है ॥
हों तो बिनु मोल के बिकानो बलि बारेही तें, ओट राम नाम की ललाट लिखि लई
है ।

कुँभज के किंकर बिकल बूढ़े गोखुरनि, हाय राम राय ऐसी हाल कहूँ भई है
॥३८॥

बाहुक-सुबाहु नीच लीचर-मरीच मिलि, मुँहपीर केतुजा कुरोग जातुधान हैं ।
राम नाम जगजाप कियो चहों सानुराग, काल कैसे दूत भूत कहा मेरे मान हैं ॥
सुमिरे सहाय राम लखन आखर दोऊ, जिनके समूह साके जागत जहान हैं ।
तुलसी सँभारि ताड़का सँहारि भारि भट, बेधे बरगद से बनाइ बानवान हैं ॥३९॥

बालपने सूधे मन राम सनमुख भयो, राम नाम लेत माँगि खात टूकटाक हों ।
परयो लोक-रीति में पुनीत प्रीति राम राय, मोह बस बैठे तोरि तरकि तराक हों
॥

खोटे-खोटे आचरन आचरत अपनायो, अंजनी कुमार सोध्यो रामपानि पाक हों ।
तुलसी गुसाँई भयो भोंडे दिन भूल गयो, ताको फल पावत निदान परिपाक हों
॥४०॥

असन-बसन-हीन बिषम-बिषाद-लीन, देखि दीन दूबरो करै न हाय हाय को ।
तुलसी अनाथ सो सनाथ रघुनाथ कियो, दियो फल सील सिंधु आपने सुभाय को
॥

नीच यहि बीच पति पाइ भरु हाईगो, बिहाइ प्रभु भजन बचन मन काय को ।
ता तें तनु पेषियत घोर बरतोर मिस, फूटि फूटि निकसत लोन राम राय को
॥४१॥

जीओं जग जानकी जीवन को कहाइ जन, मरिबे को बारानसी बारि सुरसरि को ।
तुलसी के दुहूँ हाथ मोदक हैं ऐसे ठाँउ, जाके जिये मुये सोच करिहैं न लरि को ॥
मोको झूटो साँचो लोग राम को कहत सब, मेरे मन मान है न हर को न हरि को ।
भारी पीर दुसह सरीर तें बिहाल होत, सोऊ रघुबीर बिनु सकै दूर करि को ॥४२॥

सीतापति साहेब सहाय हनुमान नित, हित उपदेश को महेस मानो गुरु कै ।
मानस बचन काय सरन तिहारे पाँय, तुम्हरे भरोसे सुर में न जाने सुर कै ॥
ब्याधि भूत जनित उपाधि काहु खल की, समाधि कीजे तुलसी को जानि जन फुर
कै ।

कपिनाथ रघुनाथ भोलानाथ भूतनाथ, रोग सिंधु क्यों न डारियत गाय खुर कै
॥४३॥

कहाँ हनुमान सों सुजान राम राय सों, कृपानिधान संकर सों सावधान सुनिये ।
हरष विषाद राग रोष गुन दोष मई, बिरची बिरञ्ची सब देखियत दुनिये ॥
माया जीव काल के करम के सुभाय के, करैया राम बेद कहैं साँची मन गुनिये ।
तुम्ह तें कहा न होय हा हा सो बुझैये मोहि, हों हूँ रहों मौनही बयो सो जानि
लुनिये ॥४४॥

Hanuman Bahuk Paath

**Shri Ganeshay Namah
Shri Janakivallabho Vijayate
Shrimad-Goswami-Tulsidas-Krit**

Chhappaya

Sindhu-taran,Siya-soch-haran, Rabi-baalbaran-tanu |
Bhujbisaal, moorti karaal, kaalhuko kaal janu ||
Gahan-dahan-nirdahan-lanknihsank, bank-bhuv |
Jaatudhaan-balvaan-maan-mad-davanpavansuv ||
KahTulsidas sevat sulabh, sevak hit santat nikat |
Gunganat,namat, sumirat, japat, saman sakal-sankat-bikat || 1 ||

Svaran-saail-sankaskoti-rabi-tarun-tej-ghan |
Urbisaal, bhujdandh chand nakh bajra bajratan ||
Pingnayan, bhrikutee karaal rasnaa dasnaanan |
Kapiskes, karkas langoor, khal-dal bal bhaanan ||
KahTulsidas bas jaasu ur maarutsut moorti bikat |
Santaappaap tehi purush panhi sapnehun nahin aavat nikat || 2 ||

Jhulna

Panchmukh-chamukh-bhrigumukhyabhat-asur-sur,
Sarv-sari-samarsamratth sooro |
Bankurobeer birudaait birudaavlee,
Baidbandee badat paaijpooro ||
Jaasugungaath Raghunaath kah, jasu bal,
Bipul-jal-bharitjag-jaldhi jhooro |
Duvan-dal-damankokaun Tulsees hai
Pavankopoot Rajpoot rooro || 3 ||

Ghanakshari

Bhanusonparrhan hanuman gaye bhanu man-
anumaanisisukeli kiyo pherphaar so |
Paachhilepagni gam gagan magan-man,
Kramkona bhram, kapi baalak-bihaar so ||

Kautukbiloki lokpaal hari har bidhi
Lochananichakaachaundhee chitni khabhaar so |
Balkaaidhaun beerras, dheeraj kai, sahas kai,
Tulsisareer dhare sabniko saar so || 4 ||

Bharatmeinpaarthke rathketu kapiraaj,
Gaajyosuni kururaaj dal halbal bho |
KahayoDron Bheesham sumeersut Mahaabeer,
Beer-ras-baari-nidhijaako bal jal bho ||
Baanarsubhaay baalkeli bhoomi bhaanu laagi,
Phalangphalaanghoonten ghaati nabhtal bho |
Naai-naaimaath jori-jori haath jodha johain,
Hanumandekhe jagjeevanko phal bho || 5 ||

Gopadpayodhi kari holika jyon layee lank,
Nipatnisank parpur galbal bho |
Dron-sopahaar liyo khyaal hee ukhari kar,
Kanduk-jyonkapikhel bel kaaiso phal bho ||
Sankatsamaajasmanjas bho Ramraaj
Kaajjug-poogniko kartal pal bho |
Saahseesamatth Tulsiko naah jaaki baan,
Lokpaalpaalanko phir thir thal bho || 6 ||

Kamathkeepeethi jaake gorhnikkee gaarhain maano
Naapkebhaajan bhari jalnidhi-jal bho |
Jaatudhaan-daavanparaavanko durge bhayo,
Mahaameenbaastimi tomaniko thal bho ||
Kumbhkarana-Ravan-payodnaad-eedhanko
Tulsiprataap jaako prabal anal bho |
Bheeshamkahat mere anumaan Hanuman-
Saarikhotrikaal na trilok mahaabal bho || 7 ||

DootRamrayko, sapoot poot paunko, too
Anjaneekonandan prataap bhoori bhaanu so |
Seey-soch-saman,durit-dosh-daman,
Saranaaye avan, lakhanpriya praan so ||
Dasmukhdusah daridra daribeko bhayo,
Pratakilok aok Tulsi nidhaan so |
Gyan-gunvaanbalvaan sevaa saavdhaan,
Saahebsujaan ur aanu Hanuman so || 8 ||

Davan-duvan-dalbhuvan-bidit bal,
Baidjas gaavat bibudh bandeechor ko |
Paap-taap-timirtuhin-vightan-patu,
Sevak-saroruhasukhad bhaanu bhorko ||
Lok-parloktenbisok sapne na sok,
Tulsikehiye hai bharoso ek aorko |
Ramkodulaaro daas baamdevko nivaas,
Naamkali-kaamtaru kesri-kisorko || 9 ||

Mahaabal-seem,mahaabheem,mahaabaanit,
Mahabeerbidit barayo Raghubeerko |
Kulis-kathortanujorparai ror ran,
Karuna-kalitman dhaarmik dheerko ||
Durjankokaalso karaal paal sajjanko,
Sumireharanhaar Tulsiki peerko |
Seey-sukhdaayakdulaaro Raghunaayak ko,
Sevaksahaayak hai saahsee sameerko || 10 ||

Rachibekobidhi jaise, paalibeko hari, har
Meechmaaribeko, ज्याibeko sudhaapaan bho |
Dharibekodharni, tarni tam dalibeko,
Sokhibekrisaanu, poshibeko him-bhaanu bho ||
Khal-dukh-doshibeko,jan-paritoshibeko,
Maangibomaleentaako modak sudaan bho |

Aaratkeeaarti nivaaribeko tihoon pur,
Tulsikosaheb hatheelo Hanuman bho || 11 ||

Sevaksyokae jaani jaankees maanai kaani,
Saanukoolsoolpaani navaai naath naankko |
Devidev daanav dayaavane havaai joraain haath,
Baapurebaraak kahaa aur raja raankko ||
Jaagatsovat baithe baagat binod mod,
taakaijo anarth so samarth ek aankko |
sabdin rooro paraai pooro jahan-tahan taahi,
jaakehai bharoso hiye hanuman haankko || 12 ||

Saanugsagauri saanukool soolpani taahi,
Lokpaalsakal lakhan ram janki |
Lokparlokko bisok so tilok taahi,
Tulsitamai kahaa kaahu beer aankee ||
Kesrikisorbandeechorke nevaaje sab,
Keertibimal kapi karunanidhaankee |
Balak-jyonpaalihain kripaalu muni siddh taako,
jaakehiye hulsati haank hanumanki || 13 ||

Karunanidhaan, balbudhike nidhaan, mod-
mahimanidhaan,gun-gyaanke nidhaan hau |
Baamdev-roop,bhoop Ramke sanehee, naam
lait-daitarth dharm kaam nirbaan hau ||
Aapneprabhav, Sitanathke subhaav seel,
Lok-baid-bidhikebidush Hanuman hau |
Mankee,bachankee, karamkee tihoon prakar,
Tulsitihaaro tum saheb sujaan hau || 14 ||

Mankoagam, tan sugam kiye kapees,
Kaajmahaaraajke samaaj saaj saaje hain |

Dev-bandeechorranror Kesreekisor,
Jug-jugjag tere birad biraaje hain ||
Beerbarjor, ghati jor Tulsiki aur
Sunisakuchaane saadhu, khalgan gaaje hain |
Bigreesanvaar Anjanikumar keeje mohin,
Jaisehot aaye Hanumanke nivaaje hain | 15 ||

Savaiya

Jaansiromanihau Hanuman sadaa janke man baas tihaaro |
Dhaarobigaaro main kaako kahaa kehi kaaran kheejhat haun to tihaaro ||
Saahebsevak naate te haato kiyo so tahaan Tulsiko na chaaro |
Doshunaaye tain aagehunko hoshiyaar havai hon man tau hiye haaro
||16||

Terethape uthapaai na mahes, thapaai thirko kapi je ghar ghaale |
Terenivaaje gareebnivaaj biraajat baairinke ur saale |
Sankatsoch sabaai Tulsiki liye naam phataai makreeke-se jaale |
Boorhbhaye, bali, merihi baar, ki haari pare bahutaai natt paale || 17 ||

Sindhutare, barhe beer dale khal, jaare hain lankse bank mavaa se |
Taaanran-kehri kehrike bidle ari-kunjar chaail chavaa se ||
Tosonsamath susaaheb sei sahaai Tulsiki dukh dosh davaase |
Baanarbaaj barhe khal-khechar, leejat kyon na lapeti lavaa-se || 18 ||

Achh-vimardankaanan-bhaani dasaanan aanan bhaan nihaaro |
Baaridnaadankpan kumbhakaran-se kunjar kehri-baaro ||
Ram-prataap-hutaasan,kachh,bipachh, sameer sameerdulaaro |
Paapten,saapten, taap tihoonte sadaa Tulsiki kahan so rakhvaaro || 19 ||

Ghanakshari

Jaanatjahaan Hanumanko nivaajyau jan,
Mananumaani, bali, bol na bisaariye |
Sevaa-jogTulsi kabhoon kahaa chook paree,
Sahebsubhaav kapi saahibee sanbhaariye ||
Apraadheejaani keejaai saasti sahas bhaanti,
Modakmaraai jo, taahi maahur na maariye |
Saahseesameerke dulaare Raghubeerjooke,
Baanhpeer Mahaabeer begi hee nivaariye || 20 ||

Baalakbiloki, bali baareten aapno kiyo |
Deenbandhudayaa keenheen nirupaadhi nyaariye |
Raavrobharoso Tulsike, Raavroee bal,
Aasraavreeyaai, daas raavro bichaariye ||
Barhobikraal kali, kaako na bihaal kiyo,
Maathepagu baleeko, nihaari so nivaariye |
Kesreekisor,ranror, barjor beer,
Bahunpeerraahumaatu jyaun pachaari maariye || 21 ||

Uthapethapanthir thape uthpanhaar,
Kesreekumarbal aapno sambhariye |
Ramkegulaamniko kaamtaru Ramdoot,
Mosedeen doobareko takiyaa tihaariye ||
Sahebsamarth toson Tulsike maathe par,

Souapraadh binu beer, baandhi maariye |

Pokhreebisaal banhu, bali baarichar peer,

Makreejyaun pakrikaai badan bidaariye || 22||

Ramkosaneh, Ram saahas lakhan siya,
Ramkeebhagti, soch sankat nivaariye |
Mud-markatrog-baarinidhi heri haare,

Jeev-jaamvantkobharoso tero bhaariye ||
Koodiyekripaal Tulsi suprem-pabbyaten,
Suthalsubel bhaalu baaithikaai bichaariye |
Mahabeerbankure baraakee banhpeer kyon na,
Lankineejoyon laatghaat hee marori maariye || 23 ||

Lok-parlokhoontilok na bilokiyat,
Tosesamrath chash chaarihoon nihaariye |
Karm,kaal, lokpaal, ag-jag jeevjaal,
Naathhaath sab nij mahimaa bichaariye ||
Khaasdaas raavro, nivaas tero taasu ur,
Tulsiso dev dukhee dekhiyat bhaariye |
Baattarumool banhusool kapikachhu-beli,
Upjeesakeli kapikeli hee ukhaariye || 24 ||

Karam-karaal-kansBhoomipaalke bharose,
Bakeebakbhaginee kaahooten kahaa daraaigee|
Barheebikraal baalghaatinee na jaat kahi,
Baanhubalbaalak chabeele chote charaaigee||
Aaeahaai banaae besh aap hee bichaari dekh,
Paapjaaya sabko guneeke paale paraaigee|
Pootnapisaachinee jyaaun kapikaanh Tulsikee,
Banhpeeramahaabeer, tere maare maraaigee|| 25 ||

Bhaalkeeki kaalkee ki roshkee tridoshkee hai,
Bedanbisham paap-taap chalchaanhkee |
Karmankootkee ki jantramantra bootkee,
Paraahijaahi paapinee maleen manmaankee ||
Paaihhisajaay nat kahat bajaay tohi,
Baavreena hohi baani jaani kapinaankee |
AanHanumaankee dohaaee balvaankee,
SapathMahaabeerkee jo rahaai peer baanhkee || 26 ||

Sinhikasanhaari bal, sursaa sudhaari chhal,
Lankineepachhaari maari baatika ujaaree hai |
Lankparjaari makree bidaari baarbaar,
Jaatudhaandhaari dhooridhaanee kari daaree haai ||
Torijamkaatari Madodri karhori aanee,
Ravankeeraanee Meghnad Manhtaaree haai ||
Bheerbaanhpeerkee nipat raakhee Mahaabeer,
Kaaunkesakoch Tulsike soch bhaaree haai || 27 ||

Terobaalkeli beer suni sahmat dheer,
Bhoolatsareersudhi sakra-rabi-rahukee ||
Terebaanh basat bisok lokpaal sab,
Teronaam lait rahaai aarti na kaahukee ||
Saamdaan bhed bidhi baidhoo labed sidhi,
Haathkapinathheeke chotee chor saahukee |
Aalasanakh parihaaskaai sikhaavan haai,
Aitedin rahee peer Tulsike baahukee || 28 ||

Tooknikoghar-ghar dolat kangaal boli,
Baaljyon kripaapal natpaal paali poso haai |
Keenheehaai sanbhaar saar Anjaneekumar beer,
Aapnobisaarihaain na merehoo bharoso haai ||
Itnoparekho sab bhaanti samrath aaju,
Kapiraajsaanchee kahaanun ko Tilok toso haai |
Saastisahat daas keeje pekhi parihaas,
Cheereekomaran khel baalkaniko so haai || 29 ||

Aapnehee paaptein tritaapatein ki saaptein,
Barreehaai baanhbedan kahee na sahi jaati haai |
Aaushadhanek jantra-mantra-totkaadi kiye,
Baadibhaye devtaa manaaye adhikaati haai ||

Kartaar,bhartaar, hartaar, karm, kaal,
Kohaai jagjaal jo na maanat itaati haai |
Cherotero Tulsee too mero kahyo Ramdoot,
Dheelteree beer mohi peertein piraati haai || 30 ||

DootRamrayako, sapoot poot baayko,
Samathhhaath paayko sahaay asahaayko |
Baankeebiradaavlee bidit baid gaiyat,
Raavanso bhat bhayo muthikaake ghaayako ||
Aitebarhe saaheb samarthko nivaajo aaj,
Seedatsusevak bachan man kaayako |
Thoreebaanhpeerkee barhi galaani Tulsiko,
Kaunpaap kop, lop pragat prabhaayako || 31 ||

Deveedev danuj manuj muni siddh naag,
Chotebarhe jeev jete chetan achet haain |
Pootnapisaachee jaatudhaanee jaatudhaan baam,
Ramdootkeerajaai maathe maani lait haain ||
Ghorjantra mantra koot kapat kurog jog,
Hanoomaanaan suni charhat niket haain |
Krodhkeeje karmko prabodh keeje Tulseeke,
Sodhkeeje tinko jo dosh dukh dait haain || 32 ||

Terebal baanar jitaaye ran Raavanson,
Tereghaale jaatudhaan bhaye ghar-gharke |
Terebal Raamraj kiye sab surkaaj,
Sakalsamaaj saaj saaje Raghubarke ||
Terogungaan suni geerbaan pulkat,
Sajalbilochan biranchi Hari harke |
Tulsikemaathepar haath phero keesnaath,
Dekhiyena daas dukhee tose kanigarke || 33 ||

Paalotere tookko parehoo chook mookiye na,
Koorkaarhee dooko haaun aapnee aur heriye |
Bhoraanaathbhorehee sarosh hot thore dosh,
Poshitoshi thaapi aapno na avderiye ||
Anbutoo haaun Ambuchar, amb too haaun dimbh, so na,
Boojhiyebilamb avlamb mere teriye |
Baalakbikal jaani paahi prem pahichaani,
Tulseekeebaanh par laameeloom pheriye || 34 ||

Gheriliyo rogni kujogni kulogni jyaaun,
Baasarjalad ghan ghata dhuki dhaaee haai |
Barsatbaari peer jaariye javaase jas,
Roshbinu dosh, dhoom-mool malinaaee haai ||
KarnunaanidhaanHanumaan mahaabalvaan,
Herihansi haanki phoonki phaaujen taain udhaaee haai |
Khaayehuto Tulsee kurog raadh raaksani,
Kesreekisorraakhe beer bariaaee haai || 35 ||

Savaiya

Raamgulaamtuhee Hanuman
Gosaainsusaain sadaa anukoolo |
Paalyohaaun baal jyon aakhar doo
Pitumaatu son mangal mod samoolo ||
Baanhkeebedan baanhpagaar
Pukaarataarat aanand bhoolo |
ShriRaghubeernivaariye peer
Rahaaundarbaar paro lati loolo || 36 ||

Ghanakshari

Kaalkeekaraalaa karam kathinaaee keedhaaun,
Paapkeprabhaavkee subhaaya baaya baavre |
Bedankubhaanti so sahee na jaati raati din,
Soeemaan gahee jo gahee sameerdaavre ||
Laayotaru Tulsee tihaaro so nihaari baari,
Seenchiyemaleen bho tayo haai tihoon taavre |
Bhootanikeeaapnee paraayekee kripanidhaan,
Jaaniyatsabheekee reeti Ram Raavre|| 37 ||

Paayanpeerpetpeer baanhpeer munhpeer,
Jarjarsakal sareer peermaee haai |
Devbhoot pitar karam khal kaal grah,
Mohipardavri damaanak see daee haai ||
Haaunto bin molke bikaano bali baarehee tain,
AotRamnaamkee lalaat likhi laee haai |
Kumbhajkekinkar bikal boodhe gookhurani,
HaayRamraay aisee haal kahoon bhaee haai || 38 ||

Baahuk-subaahuneech leechar-mareech mili,
Munhpeer-ketujaakurog jaatudhaan haain|
Ramnaam japjaag kiyo chahon saanuraag,
Kaalkaise doot bhoot kahaa mere maan haain ||
Sumiresahaaya RamLakhan aakhar douu,
Jinkesamoooh saake jaagat jahaan haain|
Tulseesanbhaari Tadhka-sanhaari bhaaree bhat,
Bedhebargadse banai baanvaan haain || 39 ||

Baalpanesoodhe man Ram sanmukh bhayo,
Ramnaamleit maangi khaat tooktaak haan |
Paryolokreetimein puneet preeti Ramraaya,
Mohbasaaitho tori tarkitraak haan ||
Khote-khoteaachran aachrat apnaayo,

Anjanikumarsodhyo Rampaani paak haaun
Tulsee gosaaen bhayo bhorrhe din bhooli gayo,
Taakophal paavat nidaan paripaak haaun || 40 ||

Asan-basan-heenvisham-vishaad-leen,
Dekhideen doobro karaai na haay-haay ko |
Tulseeanaathso sanaath Raghunaath kiyo,
Diyophal seelsindhu aapne subhaayko ||
Neechyaahi beech pati paai bharuhaaigo,
Bihaaiprabhu-bhajan bachan man kaayko |
Taatentanu peshiyat ghor bartor mis,
Phooti-phootiniksats lon Raamraayko || 41 ||

Jiaonjag jaankeejeevanko kahaai jan,
Maribekobaaraansee baari sursariko |
Tulseekeduhoon haath modak haai aise thaun,
Jaakejiye muye soch karihaain na lariko |
Mokojhootho saancho log Ramko kahat sab,
Mereman maan haai na harko na hariko ||
Bhaareeper dusah sareertain bihaal hot,
SouuRaghubeer binu sakaai door kariko || 42 ||

Sitapatisaahab sahaay Hanuman nit,
Hitupdesko mahes maano gurukaai,
Maanasbachan kaay saran tihaare paany
Tumharebharose sur maain na jaane surkaai ||
Byaadhibhootjanit upaadhi kaahoo khalkee,
Samaadhikeeje Tulseekeo jaani jan phurkaai |
KapinaathRaghunaath bholaanaath Bhootnaath,
Rogsindhukyon na daariyat gaay khurkaai || 43 ||

KahonHanumanson sujaan Raamraayson,
Kripanidhaansankarson saavdhaan suniye |

Harashvishaad raag rosh gun doshmaee,
Bircheebiranchi sab dekhiyat duniye |
Mayajeev kaalke karamke subhaayke,
KaraaiyaRaam baid kahaain saanchee man guniye |
Tumhatenkahaa na hoy haahaa so bujhaaiye mohi,
Haaun hoon rahon maaun hee bayo so jaani luniye || 44 ||